‘‘सामाजिक अध्ययन शिक्षा में सामाजिक समझ और नागरिक प्रभावकारिता की प्रांसगिकता‘‘

Sonika chouhan
Assistant professor
St Xavier Teachers Training College

शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का|

डयुवी

शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है! शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपना आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास करता है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान होता है। वह अपने आदर्शो आकाशाओं, आशाओं, विश्वासों, परम्पराओ तथा सांस्कृतिक विरासत को विकसित नही कर सकता है।

शिक्षा का उद्‌भव अति प्राचीन काल से हुआ है। परन्तु वास्तविक रूप से शिक्षा के स्वरूप का ज्ञान बौद्धिक संहिताओं में वेदों में 4000 वर्ष पूर्व हुआ था। इसके पश्चात् शिक्षा का संगठित स्वरूप क्रमशः वैदिक काल, बौद्धकाल, मध्यकाल, ब्रिटिश काल तथा आधुनिक काल में दृष्टिगोचर होता है। इन सभी कालों में शिक्षा को व्यक्ति विकास के लिए सर्वप्रमुख एवं महत्वपूर्ण साधन माना जा रहा है।प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक समाज में निरन्तर परिवर्तनों के कारण शिक्षा का स्वरूप् बहुउद्धेश्यीय रूप धारण कर चुका है।

अतः शिक्षा उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है जो कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित होती है। शिक्षा के लक्ष्य समाज की मौजूदा महत्वकाक्षाओं व जरूरतों के साथ शाश्वत मूल्य तथा समाज के तात्कालिक सरोकारों सहित वृहद् मानकीय आदर्शो को भी प्रतिबिबित करते है।

समाज में व्यक्ति को विकास की ओर अग्रसर करने का प्रमुख साधन विद्यालय है। शैक्षिक संस्थाओं के माध्यम से बालक को समाज में व्याप्त कठिनाईयों, आधुनिक युग की चुनौतियों एवं आवश्यकता के अनुरूप समाज को परिवर्तन एवं विकसित करने की क्षमता एवं योग्यता उत्पन्न करने के लिए अनेक नेताओं, विद्वानों शिक्षाशस्त्रियों ने विद्यालय स्तर पर एक ऐसे विषय की आवश्यकता को अनुभव किया जो बालकों को मानवीय विषयों का ज्ञान कराकर समाज और राष्ट्र को एक उपयोगी नागरिक प्रदान कर सके। इन सब के फलस्वरूप सामाजिक अध्ययन विषय का विकास हुआ।

सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु -

शिक्षा के दो प्रमुख लक्ष्य है - सामाजिक समझ और नागरिक क्षमता। इसके लिए सामाजिक विज्ञानों में ली गई विषय वस्तु इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और सरकार (राजनीतिक विज्ञान), अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और नृविज्ञान मानविकी-दर्शनशास्त्र, नैतिकता, साहित्य, धर्म संगीत दृश्य, प्रदर्शनकला शामिल है।

सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम इन विषयो पर आधारित है। इन्हे सामाजिक विज्ञान सम्मेषण और एकीकृत करता है। अध्ययन के यह क्षेत्र संसाधनों के रूप में कार्य करते है। सामाजिक अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य लोकतान्त्रिक समाज के एक अन्योन्याश्रित दुनिया में नागरिकों के रूप में व्यक्ति को तर्कपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने मे मदद करता है।

NCSS के अनुसार - नागरिक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक विज्ञान और मानविकी के एकीकृत अध्ययन आवश्यक है।

नगरिक मुद्दो को समझने और उनके लिए संकल्प विकसित करने के लिए बहु-विषयक शिक्षा की आवश्यकता है और सामाजिक विज्ञान के तथ्ये, विचार, कौशल मुद्दे सभी बहुविषयक विषयों का समिश्रण है।

विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान व्यापक दो प्रमुख लक्ष्यों को तीन उपलक्ष्यो, ज्ञान, दृष्टिकोण मूल्य और कौशल के माध्यम से प्राप्त करता है।

ज्ञान - निर्माण की कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया कों व्यवस्थित रूप से निर्मित व्याख्यात्मक समालोचनात्मक और लगातार संशोधित किया जाता है। यह बड़ा क्षेत्र है जिसमे भारी मात्रा में विचार एवं सूचनाएं हैं!यह नए क्षेत्र सिद्धान्तों और समझ को प्रकाश मे लाता है। तथा जो ज्ञान विद्यार्थियों के पास पहले से मौजूद उन्हें और आगे सीखने में सक्षम बनाता है। क्योकि पूर्व ज्ञान एक उर्वर बीज शैय्या के रूप में कार्य करता है। जिसके बाद का ज्ञान जड़ पकड़ता है। शक्तिशाली अवधारणाओं से सुज्जित मन नए विचारों के अंकुरण के लिए उर्वर जमीन होता है।

दृष्टिकोण और मूल्य - सामाजिक अध्ययन का दूसरे उपलक्ष्य में अधिगम - दृष्टिकोण और मूल्य निर्देशित है। इसमें संज्ञानात्मक ज्ञान और भावनाओं, विश्वासों पर अधिक बल दिया जाता है। लोकतांन्त्रिक नागरिकता के लिए एक विशेष दृष्टिकोण (स्वभाव, गुणों,मूल्य) की आवश्यकता होती है। व्यवहार और मूल्य के बिना लोकतांत्रिक सरकार और नागरिक जीवन असंभव होगा जैसे बिना पतवार की नाव होती है अतः कुछ मूल्य एंव दृष्टिकोण राज्य और स्थानीय पाठ्यचर्या दिशा निर्देशो में सूचीबद्ध है वह विशिष्ट है।

1. सार्वजनिक मूल्य के प्रति सूचीबद्ध होना।
2. सार्वजनिक नीति के बारे में निर्णय लेते समय उत्पन्न होने वाले मूल्य संघर्षो से निष्पक्ष और प्रभावी ढ़ग से निपटने में सक्षम होना
3. देश के लिए निष्ठा की प्रतिज्ञा।
4. सर्वत्र मनुष्य के प्रति अपनेपन की भावना का विकास करना।

कौशल - तीसरा उपलक्ष्य यह पहचानता है कि कुशल व्यवहार काफी हद तक कुशल होता है क्योकि इसका समर्थन करने वाला ज्ञान होता है। कौशल का तकनीकी ज्ञान या प्रक्रियात्मक ज्ञान भी कहा जाता है।

लोकतान्त्रिक कौशल के अन्तर्गत भागीदारी, राय, कारणों की समझ, सामुदायिक निर्णय, मुद्दो (कक्षा, समुदाय, अन्तर्राष्ट्रीय) के समूह पर चर्चा मे भाग लेना, चर्चाओं का नेतृत्व करना, मध्यस्थता बातचीत और समझौता करना। किसी कार्य को स्पष्ट करने और समूह कार्य की योजना बनाने के लिए सहकारी रूप से कार्य करना। सामुदायिक संसाधनों तक पहुँचना उनका उपयोग करना और बनाना
अध्ययन और पूछताछ कौशल के अन्तर्गत मानचित्र, ग्लोब, चार्टस ग्राफ का प्रयोग करना और बनाना। पुस्तकों, विश्वकोषो इन्टरनेट, समाचार पत्रों और पुस्तकालयों जैसे विभिन्न संसाधनों से जानकारी का पता लगाना, पढ़ना और उनका विश्लेषण करना, प्रतिवेदन लिखना, मौखिक प्रस्तुती देना। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतो के बीच अन्तर करना।
बौद्धिक कौशल के अन्तगर्त महत्वपूर्ण सोच और समस्या का समाधान तुलना करना। साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष निकालना और मूल्यांकन करना। समस्याओं और मुद्दो की पहचान करना उन्हें स्पष्ट करना एवं कारण प्रभाव सबधों का उल्लेख करना आदि ।

निष्कर्ष -
सामाजिक अध्ययन एक गंभीर अध्ययन है। इससे विद्यार्थी बौद्धिक सामाजिक, नैतिक रूप से सक्षम होता है। जैसे ऐतिहासिक समझ के बिना कोई ज्ञान नही हो सकता है और भौगोलिक समझ के बिना कोई सास्कृतिक पर्यावरणीय बुद्धिमता नही आती। वैसे ही आर्थिक समझ के बिना संसाधनों का कोई उचित उपयोग नही हो सकता है तथा निर्णय लेने के लिए कोई तर्कसंगत दृष्टिकोण नही हो सकता है और न ही नागरिक समझ के बिना कोई लोकतान्त्रिक नागरिक हो सकता है यही कारण है कि सामाजिक अध्ययन शिक्षा मायने रखती है यह विषय सामुदायिक समस्याओं को हल करने में मदद कर सकता है असहिष्णुता एंव कट्टरता से लड़ सकता है पर्यावरण की रक्षा, गहरी समझ के साथ हर जगह लोगो की आशाओं, सपनो सघर्षो के प्रति सहानुभूति रखना सीखा जा सकता है।

सन्दर्भ -

1. डॉ भास्कर मिश्र (1995) ‘‘शिक्षा एवं संस्कृति नये सन्दर्भ‘‘, भावना प्रकाशन दिल्लीः पृष्ठ संख्या – 168.
2. भवंरलाल गर्ग (1997) ‘‘सामाजिक शिक्षण‘‘, विनोद पुस्तक मन्दिर आगराः पृष्ठ संख्या - 13-28.
3. भास्कर मिश्र (2002) ‘‘शिक्षक और समा‘‘, नाग पब्लिशर्स दिल्लीः पृष्ठ संख्या –25
4. R.L Sharma (2004) “Teaching of Social Studies”, Vinod Pustak Mandir Agra: Page No. 54-57.
5. Singh Y.K. (2005) “Teaching of Social Studies”, APH Publishing Corporate New Delhi: Page No. 29-40
6. गुरूसरम दास त्यागी (2006) ‘‘भारत में शिक्षा का विकास‘‘, विनोद पुस्तक आगराः पृष्ठ संख्या – 5
7. M.A Khan (2008) “Teaching of Social Studies in Elementary School”, Commanwealth Publishers New Delhi Page No. 45-47
8. लक्ष्मी भार्गव (2009) ‘‘शिक्षा के सामाजिक परिपेक्ष्य‘‘, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसीः पृष्ठ संख्या – 66
9. पंकज भास्कर, पियूष चौहान (2012) ‘‘सामाजिक विज्ञान शिक्षण‘‘, राखी प्रकाशन आगराः पृष्ठ संख्या - 283-300
10. राजीव मालवीय (2012) ‘‘शिक्षा के मूल सिद्धान्त‘‘, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबादः पृष्ठ संख्या – 66
11. R.P. Pathak (2012) “Teaching of Social Studies Pearson”, Page No. 111-115
12. एम.पी.गुप्ता तिवारी उमेश (2016) ‘‘ज्ञान एवं पाठ्यक्रम‘‘, राखी प्रकाशन आगराः पृष्ठ संख्या – 5
13. ऋतु अग्रवार (2016) ‘‘सामाजिक अध्ययन शिक्षण‘‘, राखी प्रकाशन आगराः पृष्ठ संख्या – 241
14. मदन मोहन शर्मा (2017) ‘‘सामाजिक अध्ययन शिक्षण‘‘, राखी प्रकाशन आगराः पृष्ठ संख्या - 142-180
15. एस. के वर्मा, के.एन. पाण्डेय ‘‘सामाजिक विज्ञान शिक्षण‘‘ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुरः 2018 पृष्ठ संख्या – 7

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.